विचार बिन्दु

चेहरा मस्तिष्क का प्रतिबिम्ब है और आँखें बिना कहे दिल के राज़ खोल देती हैं।
–सैंट जेरोमे

पेड़-पौधे सिर्फ हरियाली नहीं हैं, ये हमारी आत्मा को प्रफुल्लित करने के माध्यम है

प्राकृतिक परिवेश में समय बिताना मेरे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हर बार जब मैं प्रकृति के करीब गया हूं, मैंने अपने भीतर और बाहर कुछ अनमोल बदलाव महसूस किए हैं। आयुर्वेद में वनानुभव का महत्त्व अनेक सन्दर्भों में वर्णित है। समकालीन शोध भी इस विषय में कम नहीं है। वर्ष 2019 में मैंने एक वैज्ञानिक अध्ययन के बारे में पढा, जिसमें बताया गया था कि सप्ताह में 120 मिनट प्रकृति में बिताने से स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन में बडा सुधार होता है। इसे पढने के बाद, मैंने इसे अपने बहुत से साथियों को जीवन में लागू करने हेतु प्रेरित किया। जिन साथियों ने भी 120 मिनट का नियम अपनाया, उनका अनुभव अद्भुत है। किसी वन में या घने शहरी पार्क में ऊंचे पेडों के बीच बैठकर पक्षियों की चहचहाहट सुनते हुए आप महसूस कर सकते हैं कि आपके मन की बेचैनी धीरे-धीरे गायब हो रही है। यह अनुभव आपको आयुर्वेद और समकालीन अध्ययनों की सत्यता का प्रमाण देगा। आप महसूस करेंगे कि कैसे प्रकृति के साथ जुड़ाव आपके भीतर एक गहरा सुकून ला सकता है। आज यहाँ मैं आपको वनानुभव पर अपने साथियों के अनुभव साझा करूंगा।

एक दिन, अत्यधिक तनाव के कारण मेरे एक साथी की रात की नींद उड गई थी। दोस्त को मैंने सलाह दिया, ''क्यों न जंगल में लंबी सैर कर के आ जाओ?'' वह हिचकिचाते हुए सहमत हुआ। अगले ही दिन हम पास के एक जंगल में गए। वहाँ की ताजा हवा, वृक्षों से छनकर आती धूप, और मिट्टी की खुशबू ने उसके अंदर कुछ बदल दिया। जब वह वापस लौटकर अपने को आईने में देखा, तो उसकी आंखों में एक नई चमक थी। यह अनुभव मेरे उसके लिए व्यक्तिगत था, लेकिन वैज्ञानिक तथ्यों पर ध्यान दिया जाएतो पता चलता है कि वनस्पतियों से निकलने वाले केमिकल्स हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करते हैं। वनों में घूमना न सिर्फ एक अच्छा एहसास देता है, अपितु इससे आपका शरीर भी लाभान्वित होता है। आपके दिल की धड़कनें सामान्य होने लगती हैं, रक्तचाप स्थिर होने लगता है। तनाव हार्मोन कॉर्टिसोल का स्तर भी कम होता है। वस्तुत: प्रकृति में समय बिताना न केवल मन के लिए बल्कि शरीर के लिए भी आवश्यक है।

कुछ साल पहले, मेरे एक साथी का जीवन एक कठिन दौर से गुजर रहा था। वह गहरे तनाव और अवसाद में था। एक दिन, बिना किसी योजना के, उसे मैंने अपने साथ एक ऊंचे घने वृक्षों वाले पहाड़ी रास्ते पर लेकर गया। ऊंचे पेड़ों के बीच चलते हुए उसने मुझे बताया कि वह आज अपनी सांसों की आवाज सुन और महसूस कर रहा है और हर कदम के साथ कंधों से बोझ हल्का होता जा रहा है। उस दिन, मैंने वनानुभव का सही अर्थ समझाया। जापानी संस्कृति में भी इस तकनीक को शिनरिन-योकू के या वन-स्नान तकनीक के नाम से जाता है जो मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए प्रयोग की जाती है। विज्ञान में इसके पक्ष में अनेक अध्ययन हैं लेकिन मेरे मित्र के लिए यह सिर्फ विज्ञान नहीं था-यह उसके जीवन की कहानी का एक नया अध्याय था।

आप पाएंगे कि जब आप प्रकृति में समय बिताते हैं, तो रचनात्मकता और सोचने की क्षमता बढ़ जाती है। एक बार मेरा एक साथी अपनी एक परियोजना पर अटका हुआ था, तो मैंने उसे जंगल घूम कर आने की सलाह दिया। वापस आने पर, समाधान खुद-ब-खुद स्पष्ट हो गया। यह उसके लिए एक सबक था-जब दिमाग भटक रहा हो, तो उसे थोड़ी देर के लिए प्रकृति के हवाले कर दें।

मेरे बेटे की कहानी भी ऐसी ही प्रेरणादायक है। बचपन में वह वीडियो गेम्स में इतना खो जाता था कि उसकी सामाजिक और शारीरिक गतिविधियां कम होने लगी थीं। मैंने उसे अपने साथ वनों में घुमाने का फैसला किया। उसने मुझे बताया कि उसने वहां पेड़-पौधों को अपना सबसे अच्छा दोस्त मानने लगा है। उसने कहा, ''जंगल में रहना ऐसा लगता है जैसे मैं खुद से जुड़ गया हूं।'' आज उसे जब भी समय मिलता है देश भर के वनों और वन्य-जीव अभयारण्यों में टहलने के लिए चल देता है। सुन्दर प्रकृति की खोज में देश भर में वह लाखों किलोमीटर अपनी मोटर साइकिल से घूम चुका है। यह अनुभव मुझे एक अध्ययन की याद दिलाता है, जिसमें बताया गया है कि बच्चों का प्रकृति से जुड़ाव उनके सामाजिक और भावनात्मक विकास को मजबूत करता है।

आज, जब जीवन के संघर्षों और भागदौड़ में हमारा संबंध अपनी जड़ों से टूटता जा रहा है, वृक्ष और वनस्पतियाँ हमें पुनः स्मरण कराती हैं कि हमारी आत्मा का पोषण केवल प्रकृति के माध्यम से ही संभव है। उनकी हरियाली में छुपा है एक ऐसा अमृत, जो हमें मानसिक स्थिरता और आनंद प्रदान करता है। वे हमारे जीवन में संतुलन और सामंजस्य का प्रवेश कराते हैं। इसलिए, आइए, अपने जीवन में वृक्षों और वनस्पतियों को केवल पर्यावरण का हिस्सा न मानें। उन्हें अपनी दिनचर्या का अभिन्न अंग बनाएं।

इसी तरह एक दादी माँ जो अकेलेपन से जूझ रही थीं, उन्हें मैंने पास के पार्क में सुबह की सैर के लिए प्रेरित किया। कुछ महीनों में ही उनकी हंसी और जोश वापस आ गया। वह कहने लगीं, ''यह पार्क मेरा नया दोस्त बन गया है।'' यह देखकर मुझे एहसास हुआ कि प्रकृति का प्रभाव केवल बच्चों पर ही नहीं, बल्कि वृद्धजनों पर भी गहरा होता है। एक और घटना याद आती है। मेरी दादी ने एक बार बताया था कि जब वह युवा थीं, तो कैसे खेतों में काम करते हुए प्रकृति के साथ उनका संबंध मजबूत हुआ करता था। उन्होंने कहा, ''वह धूल भरी मिट्टी, खेतों की हवा-यह सब मेरे जीवन का हिस्सा था।'' यह याद हमें बताती है कि हमारे पूर्वजों का प्रकृति के साथ गहरा रिश्ता था, जो आज हम खोते जा रहे हैं।

अनेक बार मैंने एक सामुदायिक वृक्षारोपण अभियानों में भाग लिया है। वहां लोग भले ही अजनबी हों लेकिन जैसे ही मिलकर पेड़ लगाते है उन लोगों के मध्य मित्रता का प्रारंभ हो जाता है। यह देखकर मुझे अनुभव हुआ कि प्रकृति केवल व्यक्तिगत शांति का ही स्त्रोत नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संबंधों को भी ठोस बनाती है। एक अध्ययन में यह पाया गया है कि सामुदायिक प्रकृति परियोजनाएं सामाजिक जुड़ाव को प्रोत्साहित करती हैं। लेकिन मेरे लिएयह सिर्फ एक अध्ययन नहीं है-यह मेरे जीवन का हिस्सा है।

प्राकृतिक परिवेश में समय बिताना उन लोगों के लिए जीवन को बदलने वाला अनुभव रहता है जो शहरों में रहते हैं। यह सिर्फ शारीरिक या मानसिक स्वास्थ्य के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे जीवन के लिए एक नई दिशा प्रदान करता है।

वृक्ष और वनस्पतियाँ केवल पृथ्वी का श्रृंगार मात्र नहीं हैं; वे जीवन की गूढ़ अनुभूतियों के सजीव उपदेशक हैं। उनकी हरियाली में निहित है हमारी आत्मा को प्रफुल्लित करने की अनुपम शक्ति, जो बाह्यशांति के साथ-साथ आंतरिक उल्लास का संचार करती है। वे केवल श्वास हेतु प्राणवायु ही नहीं देते, अपितु हमें धैर्य, त्याग और निरंतरता का अनमोल पाठ भी पढ़ाते हैं।

प्रकृति का प्रत्येक कण एक प्रेरक संदेश प्रदान करता है। जब हम किसी विशाल वटवृक्ष के नीचे बैठते हैं, तो उसकी घनी छाया हमें केवल तपती धूप से नहीं बचाती, वरन् मन के क्लेशों को भी हर लेती है। उस वृक्ष की स्थिरता और गहराई हमें सिखाती है कि जीवन के झंझावातों में भी स्थिरता और संतुलन बनाए रखना कितना महत्वपूर्ण है। उसकी गहन जड़ें धरती में मजबूती से धंसी होती हैं, जो हमें अपने मूल्यों और संस्कारों से जुड़े रहने की प्रेरणा देती हैं, जबकि उसकी फैली हुई शाखाएँ खुले आकाश की ओर बढ़ती हैं, जो हमें उच्च आदर्शों की ओर अग्रसर होने का संकेत देती हैं।

पत्तों की सरसराहट, पुष्पों की मृदुल सुगंध, और वायु में तैरती ताजगी का अहसास-यह सब हमारे मन और आत्मा को उस दिव्यता से जोड़ देते हैं, जो आधुनिक जीवन की आपाधापी में कहीं खो गई है। यह प्रकृति का मौन संवाद है, जो हमारे भीतर की शांति को जागृत करता है और हमें आत्मनिरीक्षण का अवसर प्रदान करता है।

पुन: आप यह कह सकते हैं कि वृक्ष हमें केवल प्राणवायु ही नहीं प्रदान करते; वे हमें जीने की कला भी सिखाते हैं। वटवृक्ष की दृढ़ता, बांस की लचक, और गुलमोहर का उत्सवधर्मी स्वभाव-प्रत्येक वृक्ष में जीवन के विभिन्न रंग झलकते हैं। पतझड़ में पत्तों का झड़ना हमें यह शिक्षा देता है कि पुराने बंधनों को त्यागने में ही नवनिर्माण का रहस्य छुपा है। वसंत का उल्लास हमें बताता है कि हर कठिन समय के बाद एक नवीन प्रभात अवश्य आता है। वे हमें परिवर्तन की अनिवार्यता और उसे स्वीकार करने की क्षमता प्रदान करते हैं।

वृक्षों की मूक उदारता भी हमें सिखाती है कि कैसे बिना किसी अपेक्षा के दूसरों को देना चाहिए। वे फल, छाया, और प्राणवायु प्रदान करते हैं, बिना किसी स्वार्थ के। यह नि:स्वार्थ सेवा का श्रेष्ठ उदाहरण है, जो हमें अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

जब हम किसी वृक्ष के निकट बैठते हैं, तो यह अनुभव करते हैं कि वह वृक्ष हमारी भावनाओं को अपने भीतर समाहित कर लेता है। उसकी मूक उपस्थिति हमारे भीतर छिपी क्लांति को हर लेती है और एक नवचेतना का संचार करती है। प्रकृति के सान्निध्य में बिताया गया हर क्षण हमारी आत्मा को उस गहन शांति और संतुलन से भर देता है, जिसकी खोज में हम प्राय: भटकते हैं। यह मन, शरीर और आत्मा का परिष्कार है, जो हमें आत्मज्ञान और आत्मबोध की ओर ले जाता है। वृक्षों के साथ यह संलाप हमें अपने भीतर की आवाज़ सुनने का अवसर प्रदान करता है। उनकी मौन शिक्षा हमें बताती है कि स्थिरता में भी शक्ति होती है, और मौन में भी संदेश।

आज, जब जीवन के संघर्षों और भागदौड़ में हमारा संबंध अपनी जड़ों से टूटता जा रहा है, वृक्ष और वनस्पतियाँ हमें पुन: स्मरण कराती हैं कि हमारी आत्मा का पोषण केवल प्रकृति के माध्यम से ही संभव है। उनकी हरियाली में छुपा है एक ऐसा अमृत, जो हमें मानसिक स्थिरता और आनंद प्रदान करता है। वे हमारे जीवन में संतुलन और सामंजस्य का प्रवेश कराते हैं। इसलिए, आइए, अपने जीवन में वृक्षों और वनस्पतियों को केवल पर्यावरण का हिस्सा न मानें। उन्हें अपनी दिनचर्या का अभिन्न अंग बनाएं। उनके सान्निध्य में बिताया गया एक-एक पल हमें उस आध्यात्मिक शक्ति से जोड़ेगा, जो हमारी आत्मा को सजीव और प्रफुल्लित कर देगा। वृक्षारोपण करें, बगीचों में समय बिताएं, और प्रकृति के सान्निध्य का आनंद लें। यह केवल एक क्रिया नहीं, बल्कि आत्मा की तृप्ति का मार्ग है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

खाद्य मिलावट के कहर ने जिंदगी में जहर घोला

अविनाश जोशी

खाद्य पदार्थों में मिलावट एक गंभीर मुद्दा है जो पीढ़ियों से हमारे भोजन की गुणवत्ता और सुरक्षा को प्रभावित कर रहा है। अब समय आ गया है कि इस प्रथा को समाप्त किया जाए और मांग की जाए कि हमारा भोजन हानिकारक प्रदार्थो से मुक्त हो। पिछले एक दशक में, दुनिया के विभिन्न हिस्सों में खाद्य पदार्थों में मिलावट के मामलों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

खाद्य अपमिश्रण से आंखों की रोशनी जाना, हृदय संबन्धित रोग, लीवर खराब होना, कुष्ठ रोग, आहार तंत्र के रोग, पक्षाघात व कैंसर जैसे हो सकते हैं। अनेक स्वार्थी उत्पादक एवं व्यापारी कम समय में अधिक लाभ कमाने के लिए खाद्य सामाग्री में अनेक सस्ते अवयवों की मिलावट करते हैं, जो हमारे शरीर पर दुष्प्रभाव डालते हैं।

नए रोगों के चलते डॉक्टरों के यहां लगी रोगियों की लंबी कतारें काफी हद तक मिलावटी खाद्य पदार्थों का ही नतीजा हैं। सबसे विकट स्थिति उपभोक्ता के सामने होती है, जो ज्यादातर मामलों में असली सामान की पहचान करने की सलाहियत नहीं रखते।

हम सब अपने खाने-पीने को लेकर इतने सजग होते हैं कि भोजन में जरा भी गड़बड़ होने पर उसे छोड़ देना बेहतर समझते हैं। मगर इस बात का पता शायद ही हमें कभी चल पाता है कि बाजार में जितने भी खाद्य पदार्थ मिल रहे हैं, उनमें कितने मिलावटी हैं और वे हमारे शरीर को कितना नुकसान पहुंचा रहे हैं। मगर इस बीच आम लोगों के बीच मिलावटी खाद्य पदार्थों को लेकर थोड़ी जागरूकता बढ़ी है।

भारत सरकार ने खाद्य अपमिश्रण निवारण अधिनियम सहित कई कानून बनाकर इस मुद्दे की गंभीरता को स्वीकार किया है। हालाँकि, खाद्य अपमिश्रण की प्रकृति हर राज्य में अलग-अलग होती है, और बदलते पर्यावरणीय कारकों या बेहतर उत्पादन और खेती के तरीकों के परिणामस्वरूप नए मिलावटखोर पैदा हो सकते हैं। सामान्यत: बाजार में उपलब्ध खाद्य पदार्थों में मिलावट का संशय बना रहता है। दालें, अनाज, दूध, मसाले, घी से लेकर सब्जी व फल तक कोई भी खाद्य पदार्थ मिलावट से अछूता नहीं है। आज मिलावट का सबसे अधिक कुप्रभाव हमारी रोजमर्रा के जीवन में प्रयोग होने वाली जरूरत की वस्तुओं पर ही पड़ रहा है। शरीर के पोषण के लिए हमें खाद्य पदार्थों की प्रतिदिन आवश्यकता होती है। शरीर को स्वस्थ रखने हेतु प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन तथा खनिज लवण आदि की पर्याप्त मात्रा को आहार में शामिल करना आवश्यक है तथा ये सभी पोषक तत्व संतुलित आहार से ही प्राप्त किये जा सकते हैं। यह तभी संभव है, जब बाजार में मिलने वाली खाद्य सामग्री, दालें, अनाज, दुग्ध उत्पाद, मसाले, तेल इत्यादि मिलावट रहित हों। खाद्य अपमिश्रण से उत्पाद की गुणवत्ता काफी कम हो जाती है। खाद्य पदार्थों में सस्ते रंग इत्यादि की मिलावट करने से उत्पाद तो आकर्षक दिखने लगता है, परंतु पोषकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, जिससे ये स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं।

अब से तीन दशक पहले सुनने को मिलता था कि दूध सिंथेटिक हो सकता है। मगर काफी समय से यह यूरिया, अन्य रसायनों आदि के प्रस्ताव के बाद और जाने क्या क्या मिलाकर तैयार किया जा रहा है। पनीर, केमिकल और पानी से और मावा मिल्क पाउडर से तैयार किया जा रहा है। हल्दी, लाल मिर्च, धनिया हींग, जीरा, काली मिर्च, सरसों का तेल, रिफाइंड तेल इसके अलावा अन्य खाद्य पदार्थों में मिलावट की खबरें आम हो गई हैं, मगर इस पर नजर रखने वाले महकमे शायद तब तक नींद में रहते हैं, जब तक कोई बड़ी घटना सामने नहीं आ जाते है या फिर उसके बारे में लोगों को पता नहीं चल जाता।

मुश्किल यह है कि अगर कभी जांच-पड़ताल होती है और जिन दुकानदारों के खाद्य पदार्थों के नमूने फेल होते हैं, उनके मामले निचले स्तर के अधिकारियों या अदालतों में जाते हैं, जहां मामूली प्रक्रिया अपनाने के बाद उन्हें और बख्श दिया जाता है। जबकि केवल नकली मावे को ही देखें तो देश के कुछ इलाकों में यह कुटीर उद्योग का रूप ले चुका है। ऐसे कारोबारियों से केवल जुर्माना लेकर छोड़ देने से अब स्थिति संभलने वाली नहीं है। दरअसल, कड़ी कार्रवाई की जरूरत इसलिए भी है कि मिलावटी खाद्य पदार्थ को खाने की वजह से किसी व्यक्ति की सेहत खराब हो जा सकती है, बल्कि स्थिति बिगड़ने से मौत भी हो सकती है। इसलिए अगर मिलावटखोरों के खिलाफ हत्या के प्रयास से संबंधित कानूनी धारा का इस्तेमाल करने की मांग की जाती है तो इसमें कोई हैरानी बात नहीं है।

सामान्य रूप से किसी खाद्य पदार्थ में कोई बाहरी तत्व मिला दिया जाए या उसमें से कोई मूल्यवान पोषक तत्व निकाल लिया जाए या भोज्य पदार्थ को अनुचित ढंग से संग्रहीत किया जाए तो उसकी गुणवत्ता में कमी आ जाती है। इसलिए उस खाद्य सामग्री या भोज्य पदार्थ को मिलावटयुक्त कहा जाएगा। भारत सरकार द्वारा खाद्य सामठी की मिलावट की रोकथाम तथा उपभोक्ताओं को शुद्ध आहार उपलब्ध कराने के लिए सन् 1954 में खाद्य अपमिश्रण अधिनियम (पीएफए एक्ट 1954) लागू किया गया। उपभोक्ताओं के लिए शुद्ध खाद्य पदार्थों की आपूर्ति सुनिश्चित करना स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की जिम्मेदारी है। इसको ध्यान में रखते हुए उपरोक्त खाद्य अपमिश्रण रोकथाम अधिनियम बनाया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य जहरीले एवं हानिकारक खाद्य पदार्थों से जनता की रक्षा करना,घटिया खाद्य पदार्थों की बिक्री की रोकथाम एवम धोखाधड़ी प्रथा को नष्ट करके उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करना।

जब से कुछ लोगों ने इस पर गौर करना शुरू किया है, तब से कई हकीकतें उजागर होने लगी हैं। मिलावटखोरों ने ऐसे हालात पैदा कर दिए हैं कि सही माल बेचने वाले दुकानदारों को भी लोग अब शक की नजर से देखने लगे हैं। हालांकि मिलावटखोर केवल खाद्य पदार्थों में ही नहीं, अन्य सामानों की ओर भी अपने पैर फैला चुके हैं। हैरानी की बात यह है कि जब कभी कोई मामला सामने आता है, उसके बावजूद सरकार इस काम में लगे लोगों के खिलाफ सख्त कदम नहीं उठाती। जबकि जरूरत सख्त कार्रवाई करने की है। यों हमारे आसपास हर रोज दुकानदार से लेकर किसी खाद्य पदार्थ का कारोबार करने वाले लोगों को मिलावटी सामान बेचने में जरा भी हिचक नहीं होती कि इसका इस्तेमाल करने वाले लोगों की सेहत पर इसका क्या असर पड़ेगा! मसलन, रोजमर्रा के इस्तेमाल में आने वाले दूध की गुणवत्ता को लेकर अक्सर खबरें आती रहती हैं कि इसके सेवन से घातक रोग हो सकते हैं।

अव्वल तो इसे लेकर प्रशासन गंभीर नहीं होता और जब कभी संबंधित महकमों के लोग मिलावट की गतिविधियों में लगे लोगों को पकड़ते हैं, तब भी कोई बड़ी और याद रखने वाली कार्रवाई नहीं होती। फिर कुछ दिनों बाद ऐसा धंधा करने वाले कारोबारी बेफिक्र अपना कारोबार चलाते रहते हैं। किसी पर्व-त्योहार के मौके पर बाजार में खुले तौर पर मिलावटी सामान बिकते रहते हैं, मगर कोई ऐसा तंत्र नहीं दिखता जो इन पर लगाम लगा सके। कभी शिकायत होने पर या औचक निरीक्षण में ऐसे लोग पकड़े भी जाते हैं तो कार्रवाई किसी ठोस अंजाम तक नहीं पहुंचता, ताकि अन्य लोग मिलावटी खाद्य पदार्थ न बेचें। एक ओर खाद्य पदार्थों में मिलावट कई बार सेहत पर गहरा जोखिम पैदा करता है, दूसरी ओर खाद से लेकर आम उपयोग के ज्यादातर सामानों के नकली संस्करण बाजार में मौजूद होते हैं। अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि नवजात शिशु दूध भी शुद्ध पी रहा है, इसकी कोई गारंटी नहीं है।

व्यापारी वर्ग की भी जिम्मेदारी है कि वे उपभोक्ताओं के जीवन का खयाल रखने के लिए शुद्ध सामग्री की बिक्री करें। मिलावटखोरों के खिलाफ अगर खुद कारोबारियों की ओर से ही आवाज उठेगी, तब लोगों का भरोसा भी बाजार पर बढ़ेगा। अगर कारोबार-जगत से इस मसले पर सहयोग मिलता है और वे मिलावट के विरुद्ध ठोस जमीन तैयार करा पाते हैं, तो यह एक अच्छी बात होगी।

–अविनाश जोशी,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक।

शिल्पग्राम महोत्सव शुरू, दस दिन तक शिल्प व कला की धूम रहेगी

उदयपुर, (निसं)। राज्यपाल हरिभाऊ किशनराव बागडे ने कहा कि लोक कलाएं जीवन का उजास और सामूहिक चेतना है। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति की जड़ें इतनी गहरी है कि उसे कोई मिटा नहीं सकता। उन्होंने महाराणा प्रताप को याद करते हुए कहा कि इस वीर सपूत ने मेवाड़ की भूमि को स्पर्श कर इसे वंदनीय बना दिया। महाराणा प्रताप ने हमारी संस्कृति को मिटाने आए मुगलों को सफल नहीं होने दिया। राज्यपाल शनिवार शाम केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय के तत्वावधान में हवाला रानी रोड स्थित शिल्पग्राम में पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर द्वारा आयोजित विश्व प्रसिद्ध शिल्पग्राम महोत्सव के उद्घाटन समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

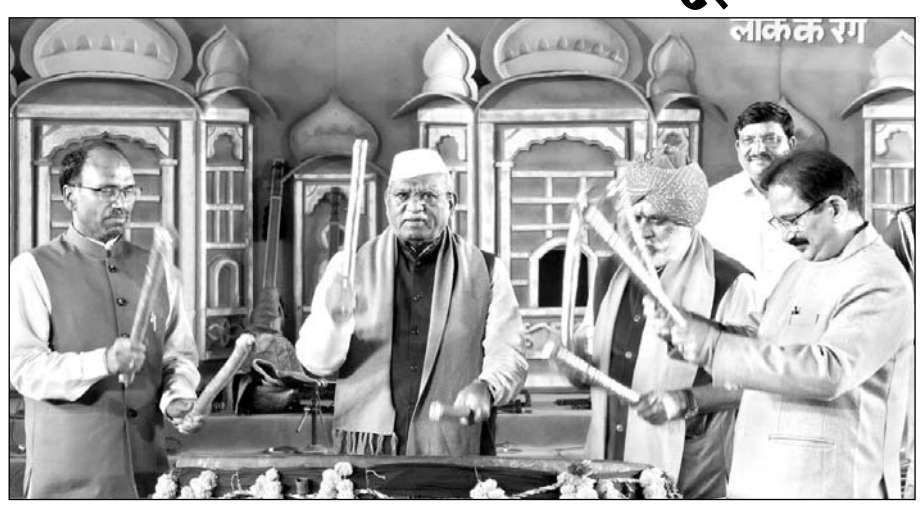

राज्यपाल हरिभाऊ किशनराव बागडे ने उदयपुर में शिल्पग्राम महोत्सव की नगाड़ा बजाकर शुरूआत की।

- **लोक कलाएं जीवन का उजास और सामूहिक चेतना: राज्यपाल बागडे**

मुक्ताकाशी मंच पर आयोजित इस समारोह में उन्होंने परंपरानुसार नगाड़ा बजाकर महोत्सव का शुभारंभ किया। इससे पूर्व उन्होंने अन्य अतिथियों के साथ दीप प्रज्वलन किया। समारोह में विशिष्ट अतिथि सांसद मन्नालाल रावत तथा विधायक फूलसिंह मीणा भी मौजूद रहे। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर के निदेशक फुरकान खान अतिथियों का स्वागत किया और शिल्पग्राम महोत्सव के संबंध में जानकारी दी। राज्यपाल बागडे ने कहा कि शिल्पग्राम एक ऐसा स्थल है, जो देश के विभिन्न प्रांतों की लोक संस्कृति को एक सूत्र में पिरोता है। इसके साथ ही 10 दिन यानी 30 दिसंबर तक ''लोक के रंग-लोक के संग'' थीम पर आधारित शिल्पग्राम महोत्सव के लोकरंजक कार्यक्रमों का आगाज हो गया। उत्सव मेवाड़-प्रदेश-देश-विदेश के लोक कला एवं संस्कृति प्रेमियों के भरपूर मनोरंजन के साथ ही लोक संस्कृतियों के विषय में ज्ञानवर्द्धन भी करेगा। समारोह के आरंभ में राज्यपाल बागडे ने संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया और शिल्पग्राम परिसर का अवलोकन किया। गवर्नर सहित सभी अतिथियों ने लोक संस्कृति से ओतप्रोत सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी देखी। राज्यपाल ने समारोह में डॉ. रूपसिंह शेखावत (भवाई लोक नृत्य) और गणपत सखाराम मसगे (कठपुतली एवं चित्रकला) को डॉ. कोमल कोठारी लाइफ टाइम अचीवमेंट लोक कला पुरस्कार प्रदान किया। उद्घाटन समारोह में ''रिद्म ऑफ इंडिया-म्यूजिकल सिंफनी'' में शामिल विभिन्न राज्यों के दो दर्जन से अधिक वाद्य यंत्रों पर 50 से ज्यादा कलाकारों की बजाई धुनों ने शिल्पग्राम का माहौल संगीतमय बना दिया और मुक्ताकाशी मंच पर मौजूद सैकड़ों दर्शकों की खूब वाहवाही लूटी। वहीं, 15 फोक डांस की ''कलर्स ऑफ इंडिया'' सामूहिक प्रस्तुति में 225 डांसर्स के सामूहिक डांस ने भी खूब समां बांधा।

वहीं ''हिवड़ा री हूक'' कार्यक्रम का रविवार से आगाज होगा। यह हूक प्रोग्राम 22 से 29 दिसंबर तक रोजाना दिन में 12 बजे से दोपहर 4 बजे तक चलेगा। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक फुरकान खान ने बताया कि ''हिवड़ा री हूक'' में प्रस्तुतियों के दौरान सांस्कृतिक प्रश्नोत्तरी यानी क्विज भी हर आर्ट लवर को खूब लुभाएगा। वहीं केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत रविवार को शिल्पग्राम महोत्सव में आएंगे। वे दोपहर में शिल्पग्राम का दौरा करेंगे।

चूरू में सीजन का पहला घना कोहरा छाया

चूरू, (निसं)। अंचल में कड़ाके की ठंड का शीतम लगातार जारी है। क्षेत्र में शनिवार को इस सीजन का पहला घना कोहरा छाया।

कोहरे के कारण लोगों की दैनिक दिनचर्या भी काफी प्रभावित हुई। शनिवार को न्यूनतम तापमान में 0.2 डिग्री की गिरावट हुई। सुबह के समय सड़कों पर चलने वाले वाहन ड्राइवरों को हेडलाइट जलाकर गाड़ियां चलानी पड़ी। सर्दी से राहत पाने के लिए लोगों ने अलाव का सहारा लिया। सुबह के समय परीक्षा देने जाने वाले विद्यार्थियों को भी सर्दी से काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा।

- **शनिवार को न्यूनतम तापमान में 0.2 डिग्री की गिरावट हुई**

कड़ाके की सर्दी के बीच शनिवार को पारा अचानक लुढ़क गया। शुक्रवार की अपेक्षा शनिवार को न्यूनतम तापमान में 0.2 डिग्री की गिरावट हुई है। सुबह दस बजे तक सूर्यदेव कोहरे की आगोश में रहे। वहीं सर्दी से राहत पाने के लिए लोग अलाव का सहारा लेते नजर आये। सर्दी के चलते चाय की दुकान पर लोगों की काफी भीड़ रही। सर्दी बढ़ने से अस्पतालों में भी सर्दी जुकाम और अस्थमा के मरीजों की संख्या बढ़ने लगी है। मौसम विभाग के अनुसार शनिवार को न्यूनतम तापमान 6.7 डिग्री दर्ज किया गया है।

राशिफल रविवार 22 दिसम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

पौष मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र सोमवार प्रात: 9:09 तक, आयुष्मान योग सायं 7:00 तक, बव करण दिन 2:32 तक, चन्द्रमा दिन 12:56 से कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-मकर, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। त्रिपुष्कर योग दिन 2:32 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:33 से 9:51 तक, लाभ-अमृत 9:51 से 12:25 तक, शुभ 1:42 से 3:00 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:16, सूर्यास्त 5:34

मेष
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

वृष
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कर्क
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात सुसंदेश प्राप्त होंगे।

सिंह
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करें। कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। मन में असंतोष बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात आवश्यक कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

वृश्चिक
अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

धनु
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कुंभ
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है।

मीन
स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।